उसकी समयसारणी पृथ्वी पर पुत्र की ईश्वरीयता की झलक देती है

यीशु ईश्वरीयता अर्थात परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी पहचान से पूरी तरह से जागरूक था। बचपन से ही वह जानता था कि वह परमेश्वर का चुना हुआ (मसायाह) है। स्पष्टत:, यीशु ने अपनी पहचान के इन दो पहलुओं को अपनी सेवकाई की ''समयसारणी'' में रहकर ही प्रकट करने का यत्न किया था। यह कोई आसान कार्य नहीं था। अपनी पहचान और स्थिति को पूरी तरह से गुप्त रखते हुए, यीशु ने उनके महत्व के संसार के बढ़ते ज्ञान पर नियन्त्रण रखा। आइए दो महत्वपूर्ण ढंगों की समीक्षा करते हैं जिनमें यीशु ने ऐसा किया।

यीशु ने अपनी पहचान कैसे छुपाई

पहले, यीशु ने अपनी पहचान को दूसरों के ज्ञान को नियन्त्रित करके छुपाने की कोशिश की। यीशु द्वारा ''चिह्न'' (*semeia*) दिखाने को यूहन्ना ने कहा, ''परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:31)। परन्तु, यूहन्ना रचित सुसमाचार में पहला चिह्न जो यीशु ने दिखाया वह उसकी मां के आग्रह पर दिखाया गया था। क्यों? क्योंकि अभी उसका ''समय नहीं आया'' था (यूहन्ना 2:4)। यीशु कई कारणों से अपनी अलौकिक शक्ति को दिखाने में सावधान था: (1) वह जानता था कि ज़रूरी नहीं कि उसकी शक्ति को परमेश्वर की शक्ति माना जाए (मत्ती 12:24)। (2) वह जानता था कि केवल ''सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों'' के आधार पर (प्रेरितों 2:22) उस पर, विश्वास करना अपने आपमें पर्याप्त नहीं होगा।[1] (3) यीशु जानता था कि ''झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता'' लोगों को भरमाने के लिए ''बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम'' दिखा सकते हैं (मत्ती 24:24, 25)। (4) वह नहीं चाहता था कि लोग उसके राज्य की नींव रखने के लिए उसकी समयसारणी से आगे निकलें।

यीशु ने बार-बार चिह्नों का इस्तेमाल किया। शायद हम कह सकते हैं कि वास्तव में यदि वह ऐसा न करता तो अपने स्वभाव से दूर चला जाता। कई बार उसके दयनीय स्वभाव

ने उसे कोई आश्चर्यकर्म करने के लिए विवश कर दिया था,[2] यद्यपि बहुत बार उसने विशेष रूप से बिनती की कि आश्चर्यकर्म को गुप्त रखा जाए (मत्ती **8**:3, 4; 9:27-30)। कभी-कभी आश्चर्यकर्म को उसकी महिमा और उसके पिता की महिमा दिखाने के लिए इस्तेमाल किया गया था (यूहन्ना 2:11; 11:1-4, 38-44)। परन्तु यह स्पष्ट है कि वह अपनी अलौकिक शक्ति और मसायाह होने की किसी राजनैतिक या समय से पूर्व घोषणा से बचने की कोशिश करता था (मरकुस 8:29, 30; यूहन्ना 1:48-51)।

यीशु ने अपनी पहचान कैसे प्रकट की

फिर, यीशु ने अपनी ही ''समयसारणी'' के अनुसार अपनी पहचान प्रकट करते हुए अपनी पूरी पहचान और भूमिका के महत्व को दिखाने पर नियन्त्रण रखने का यत्न किया। अपने बारे में बताने के लिए ''मनुष्य का पुत्र'' उसका प्रिय वाक्यांश था। आश्चर्य की बात है कि सुसमाचार के वृत्तांतों में, किसी दूसरे ने उसके *बारे में* इस वाक्यांश का इस्तेमाल कभी नहीं किया। केवल एक बार यीशु को सम्बोधित करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल तब हुआ था जब भीड़ ने उसके ही कथन उसके मुंह पर मारे थे: ''फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है'' (यूहन्ना 12:34ख)।

इस पर कोई संदेह नहीं है कि यीशु ने अपने आपको ''मनुष्य का पुत्र'' कहा। समानांतरों (मत्ती, मरकुस, लूका) को निकाल दें तो भी उसने इस शब्द को अपने लिए सुसमाचार के चार वृत्तांतों में *अस्सी* बार कहा है। समानांतरों को भी बीच में ले लें, तो एक ही तथ्य से हैरानी होती है कि यीशु ने न केवल अपना परिचय इस शीर्षक से करवाया, बल्कि अपनी पूरी सेवकाई में ''मनुष्य का पुत्र'' के रूप में अपने आपको स्थापित भी किया।[3]

आइए देखते हैं कि ''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में वास्तव में यीशु की भूमिका कितनी है:

1. *''मनुष्य के पुत्र'' ने कष्ट सहा* (मत्ती 8:20; लूका 9:58)।
2. *वह एक सेवक था* (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)।
3. *उसे लोगों के साथ गिना गया* (मत्ती 11:19; लूका 6:22; 7:34; यूहन्ना 9:35)।
4. *''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में अपनी भूमिका के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया में उसकी दिलचस्पी थी* (मत्ती 16:13)।
5. *उसे पकड़वाया गया था* (मत्ती 17:22; 20:18; 26:24, 45; मरकुस 9:31; 10:33; 14:21, 41; लूका 9:44; 22:48; 24:7क)।
6. *उसने दुख सहा* (मत्ती 17:12; 26:2; मरकुस 8:31; 9:12; लूका 9:22)।
7. *उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था* (लूका 24:7ख; यूहन्ना 3:14; 8:28; 12:24)।
8. *वह जी उठा था* (मत्ती 12:40; 17:9; मरकुस 9:9; लूका 11:30; 24:7ग)।
9. *उसे प्रकट किया गया था* (लूका 17:30)
10. *वह पुन: आ रहा है* (मत्ती 10:23; 16:27; 24:27, 30, 37, 39, 44; 25:31;

26:64ख; मरकुस 13:26; लूका 12:40; 17:24; 18:8; 21:27; यूहन्ना 3:13)।

11. *वह न्याय करेगा* (मत्ती 25:31-46; मरकुस 8:38; लूका 9:26; 12:8, 9; 17:26; 21:36)।
12. *उसका एक राज्य है* (मत्ती 16:28; 19:28)।
13. *वह ऊपर जाएगा* (यूहन्ना 6:62)।
14. *वह राज्य करेगा* (मत्ती 26:64क; मरकुस 14:62; लूका 22:69)।
15. *वह पुराने नियम से श्रेष्ठ है* (मत्ती 12:8; मरकुस 2:28; लूका 6:5)।
16. *वह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है* (मत्ती 13:41)।
17. *उसकी महिमा होती है* (यूहन्ना 1:51; 13:31)।
18. *वह पाप क्षमा करता है* (मत्ती 12:32; मरकुस 2:10; लूका 5:24; 12:10)।
19. *उसे अधिकार है* (मत्ती 9:6; यूहन्ना 5:27)।
20. *उसने धर्म शास्त्र को पूरा किया* (मत्ती 26:24; मरकुस 14:21क; लूका 18:31)।
21. *वह जीवन देता है* (यूहन्ना 6:27, 53-56)।
22. *वह उद्धार दिलाता है* (लूका 19:10)।
23. *उसकी एक ''समय सारणी'' है* (मरकुस 14:41; यूहन्ना 12:23)।

यह विरोधाभास ही है कि परमेश्वर पुत्र लगातार अपने आपको *''मनुष्य का पुत्र''* कहे। उसने ऐसा क्यों किया? इस वाक्यांश का इस्तेमाल करने से उसकी सही पहचान बड़े सुन्दर और गूढ़ ढंग से प्रकट भी हो गई और छुप भी गई। इससे उसे एक मंच मिल गया, जिससे वह पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान अपने सही स्वभाव और पहचान को बताने में नियन्त्रण रख सका। उसके लिए अपनी ''समयसारणी'' महत्वपूर्ण थी। रब्बी, मास्टर तथा शिक्षक के रूप में, वह इस ''समयसारणी'' के प्रति जागरूक रहता था। उदाहरण के लिए, सिखाने का उसका सबसे प्रसिद्ध ढंग दृष्टांतों का इस्तेमाल था। यह ढंग ऐसा था जो उसके द्वारा सिखाई गई सच्चाई को प्रकट करने और छुपाने दोनों के लिए उपयुक्त था।[4] उसने इसी कारण अपनी प्रतिज्ञा की कि उचित समय पर वह स्पष्ट भाषा में बात करेगा, सांकेतिक भाषा के अन्य प्रकार का भी इस्तेमाल किया।[5]

यद्यपि उसका देहधारी होना छिपी हुई सच्चाई का एक नमूना था, परन्तु यदि आप चाहें तो वह एक चलता फिरता दृष्टांत भी था। आखिर, परमेश्वर के चेहरे को सीधे और आमने-सामने कौन देख सकता था?[6] यीशु देह में परमेश्वर था: और उसकी देह के पर्दे के कारण, *मानवीय जीव उसकी ओर देख पाए* और उन्होंने कहा, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे *परमेश्वर*'' (यूहन्ना 20:28)। देह के पर्दे में हमारे पास आने पर वह यीशु की देह को बेधे जाने[7] और कलवरी पर अपना लहू बहाने के समय छिपी हुई थी।[8] परमेश्वर का महान प्रेम अनुग्रह और दया का महिमामय *प्रकाशन* बन गया था।

''परमेश्वर पुत्र'' ने सावधानी से अपनी पूरी पहचान और भूमिका के बारे में लोगों की समझ पर नियन्त्रण रखा।

पाद टिप्पणियां

[1]यूहन्ना 2:11, 23, 24; 6:14, 15, 60-71; मत्ती 12:38, 39; इत्यादि। [2]मत्ती 20:34; मरकुस 5:19; लूका 7:11-15. [3]सी. एस. मन्न, *मार्क*, द एंकर बाइबल, vol. 27 में संक्षिप्त चर्चा देखिए। [4]मत्ती 13:10-13, 34, 35; मरकुस 4:10-12, 33, 34; लूका 8:10. [5]यूहन्ना 10:6; 16:25, 29, 30. *Paroimia* = रूपक, आकृति, कहावत, दृष्टांत। अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवाद देखिए। [6]निर्गमन 33:20; यूहन्ना 1:18; 6:46; 1 तीमुथियुस 6:15, 16; 1 यूहन्ना 4:12क। [7]यीशु की ''देह का पर्दा'' बेधे जाने पर, सांकेतिक रूप में मन्दिर का पर्दा फट गया था (मत्ती 27:51; मरकुस 15:38; लूका 23:45)। [8]''... हमारे लेखक ने पर्दे को हमारे प्रभु के मानवीय जीवन के संकेत के रूप में देखा। ...'' (एफ. एफ. ब्रूस, *द ऐपिस्टल टू द हिब्रूज़* [ग्रैंड रेपिड्स, मिशि.: Wm.B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964], 249)।

''मनुष्य का पुत्र''

शायद हम ''मनुष्य का पुत्र'' शब्द से यीशु की पहचान एक मनुष्य के रूप में करने लगें। परन्तु, यदि हम यीशु के समय में होते, तो इस शब्द का विपरीत परिणाम होना था। इस वाक्यांश से हम यीशु को झट से एक ''स्वर्गीय व्यक्तित्व'' के रूप में पहचान लेते। क्यों? क्योंकि यीशु एक अपोकलिप्टिक [भविष्यवाणी की भाषा] के समय में रहता था। हम पूरी तरह से अपोकलिप्टिक[1] का अर्थ तो खोज सकते, परन्तु कुछ व्याख्यात्मक टिप्पणियों से अपने बारे में यीशु के पसंदीदा शब्दों ''मनुष्य का पुत्र'' को अच्छी तरह समझने में सहायता मिल सकती है।

200 ई.पू. से लगभग 100 ईस्वी तक का संसार यहूदी लोगों के लिए ''पतन हुआ संसार'' था। इनसे पूर्व की शताब्दियों में, यहूदी लोगों ने बहुत सी मुसीबतें झेली थीं। 721 ई. पू. में इस्राएल का राज्य अश्शूर के नियन्त्रण में हो गया था। 606 से 586 ई. पू. तक यहूदा का राज्य पराजित हो गया था, इसके लोगों को बन्दी बनाकर बाबुल में ले जाया गया था और उनके मन्दिर और प्रिय नगर यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया था। 539 ई. पू. में फारसियों ने बाबुल पर विजय पा ली थी और उसके थोड़ी देर बाद उन्होंने यहूदियों को अपने देश लौटने की अनुमति दे दी थी। उन्होंने अन्ततः यूनानियों, सीरियों, मिसरियों और रोमी शासन की कठोर मार भी सही थी। उन्होंने मन्दिर का पुनर्निर्माण कर लिया था (515 ई. पू.) और कुछ समय के लिए सीरिया के शासन से स्वतन्त्रता भी पा ली थी (लगभग 165-163 ई. पू.) परन्तु वे लगभग 63 ई. पू. से सदियों तक प्रत्यक्ष तौर पर रोमी शासन के अधीन रहे। रोमी लोगों ने 70 ईस्वी में दूसरा मन्दिर गिरा दिया था।

इतने लम्बे अरसे तक रहने वाली हार के कारण यहूदियों की पीढ़ियां चिन्तित और निराश हो गई थीं। उनकी राष्ट्रीय आशाओं को धक्का लगा था। उन्होंने अपने धर्म शास्त्रों में भविष्यवाणियों की बातों की कुछ प्रतिज्ञाओं का फिर से अर्थ करने की आवश्यकता महसूस की थी। उनका प्रतिज्ञा किया हुआ राज्य कहां था? परमेश्वर के ठहराए हुए के द्वारा उस बड़ी बहाली और प्रतिज्ञा किए हुए मसायाह के शासन की प्रतिज्ञाओं का क्या हुआ।[2]

संताप के इस कड़ाहे से परमेश्वर के निराश लोगों में आशा लाने के लिए अपोकलिप्टिक साहित्य का एक प्रकार निकला। आशा का यह संदेश सामान्यतया विस्तृत, सांकेतिक, चिह्नात्मक भाषा में था। इस प्रकार की लेखनी का आधार यह मान्यता थी कि परमेश्वर ने मनुष्य जाति की बुराई के कारण इतिहास में उन्हें ''त्याग दिया'' था, परन्तु अभी भी नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में *था।* परमेश्वर ने संसार पर विजय पा लेनी थी; धर्मियों को बदला दिया जाना था, और परमेश्वर का राज्य बढ़ना था, चाहे वह समय में बढ़े या उत्तरऐतिहासिक राज्य में। अभी भी पवित्र शास्त्र की प्रतिज्ञाओं के सत्य होने की आशा थी, परन्तु एक ''नये'' ढंग से।[3]

इस संदर्भ में, ''मनुष्य का पुत्र'' वाक्यांश का महत्व चौंकाने वाला था। इसमें ''स्वर्गीय मूल'' का एक संकेत था। दानिय्येल के, अध्याय 7 से 12 तक का अपोकलिप्टिक भाग ''मनुष्य के पुत्र'' के ''अतिप्राचीन'' की उपस्थिति में होने का संकेत देता है। उसे एक राज्य दिया गया था जो ''अविनाशी ठहरा'' है (दानिय्येल 7:14)। पृथ्वी के राज्यों की तुलना में दानिय्येल ने कहा कि ''अति महान के पवित्र लोग उस राज्य को पाएंगे और इस पर सदा सदा के लिए प्रभुता करेंगे।''[4] यहूदियों की अपोकलिप्टिक आशाओं का आधार ''अति प्राचीन'' (परमेश्वर) था, जिसने ''मनुष्य के पुत्र'' के आने से उनकी ओर से मानवीय इतिहास में हस्तक्षेप करना था। उसने उनका बदला लेना था अर्थात उसने शासन करना था और उन्होंने राज्य के वारिस होना था।

कोई संदेह नहीं अन्ततः प्रारम्भिक मसीहियों ने यीशु नासरी को पुराने नियम में वर्णित प्रतिज्ञा किए हुए ''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में देखा था। इसका अर्थ है कि उन्होंने उसे स्वर्गीय राज्य के व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया; वह परमेश्वर था। वह सुलैमान (2 शमूएल 7:14) या इस्राएल की तरह (निर्गमन 4:22, 23) परमेश्वर का एक पुत्र नहीं था। ''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में वह भजन संहिता 8:4-6 (देखिए इब्रानियों 2:5-11; 1 कुरिन्थियों 15:27; इफिसियों 1:22) और यशायाह 7:14 (देखिए मत्ती 1:22, 23) का पूरा होना था। वह वास्तव में अपोकलिप्टिक विजयी अर्थात ईश्वरीय व्यक्ति था। उसे उसके तेज में ''प्रथम और अन्तिम और जीवता ...'' के रूप में देखा जाता था (प्रकाशितवाक्य 1:12-18)।

फिर, बार-बार यीशु से अपने लिए ''मनुष्य का पुत्र'' वाक्यांश सुनने वाले उसे अपनी आशाओं तथा स्वप्नों के पूरा होने के रूप में स्वीकार क्यों नहीं कर पाए? उसके देहधारी होने के कारण। अपोकलिप्टिक भाषा का अर्थ करने वाले यहूदियों ने अपनी सोच और इब्रानी शास्त्रों का नया अर्थ निकाला था। उनकी पुनर्व्याख्या के अनुसार उनकी विपत्तियों का समाधान निकट समय या अन्त समय में परमेश्वर के व्यक्तिगत हस्तक्षेप से कम नहीं था। पुराना क्रम बन्द हो जाना था। परमेश्वर के अपोकलिप्टिक राज्य ने उन्हें फिर से इकट्ठे होने का आश्वासन देना था। ''मनुष्य का पुत्र'' इस महिमा प्राप्ति के लिए एक उत्प्रेरक तत्व होना था।

स्पष्टतः केवल मानवीय जीव ऐसी अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकता था। कोई नश्वर इतिहास और वास्तविकता को बदलकर एक युग में सम्पूर्ण होकर दूसरे में प्रवेश नहीं करा

सकता था! शरीर में यीशु उनके अपोकलिप्टिक दर्शन में उपयुक्त नहीं था। यद्यपि उसने बार-बार अपने आपको ''मनुष्य का पुत्र'' कहा, परन्तु उसकी मानवीयता ने उसकी ईश्वरीयता को छुपा लिया। उसने बार-बार ज़ोर दिया कि परमेश्वर का राज्य निकट है, परन्तु लोगों ने इसकी अपोकलिप्टिक महिमा और महत्ता का संकेत नहीं देखा। छुटकारे और महिमा की बहाली के उनके दर्शन में ''देह-में-परमेश्वर'' सम्मिलित नहीं था।

यीशु की सेवकाई ने एक निर्धारित ''समय सारणी'' पर उसकी पहचान और उद्देश्य को प्रकट किया। यीशु ने किसी भी अन्य अद्‌भुत काम करने वाले जैसा लगने से बचने के लिए अपने आश्चर्यकर्मों की सुरक्षा की। वह ''झूठे मसीहों'' में से एक होने का ठप्पा लगने से बचने के लिए मसायाह के रूप में अपनी पहचान प्रकट करने के बारे में सचेत था (मरकुस 13:21-23)। उसने ''मनुष्य का पुत्र'' शब्द का इस्तेमाल यह जानते हुए किया कि भविष्यवाणी की भाषा का अर्थ करने वाले लोग कभी भी उसे ''उनके'' मनुष्य के पुत्र की भूमिका को पूरा करते नहीं देखेंगे। उसने अपनी सेवकाई में ''परोक्ष'' ढंग का इस्तेमाल क्यों किया? मनुष्य के गिरने से लेकर परमेश्वर अभी तक मनुष्य के समक्ष नहीं आया था।

> [परमेश्वर] जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है... (1 तीमुथियुस 6:15ख, 16)।

यदि परमेश्वर, अपनी ''अगम्य ज्योति'' में सीधे मनुष्य के सामने उसके पाप की स्थिति में आ जाए, तो उसका परिणाम विनाशकारी होगा। इसलिए, परमेश्वर के रूप में, यीशु देह के पर्दे में, देहधारी हुआ। इस प्रकार, वह उन्हें अपने तेज प्रताप और शक्ति से भस्म किए बिना ''खोए हुओं को ढूंढ़ और बचा'' पाया। यदि परमेश्वर ''अगम्य ज्योति'' में रहता है, तो क्या इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि अपनी बेपर्द, पवित्रता में, वह हमारी पापपूर्ण उपस्थिति में नहीं आ सकता? परन्तु, वह हमारे बीच था! ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया ...'' (2 कुरिन्थियों 5:19)।

हैरान करने वाली इस सच्चाई को प्रकाश में लाने के लिए यीशु ने समझदारी बरती। उसने अपने मसायाह होने पर ज़ोर नहीं दिया, परन्तु उसने परमेश्वर का मसायाह होने की बात अवश्य स्वीकार की (यूहन्ना 4:25, 26)। उसने अद्‌भुत चिह्नों की अपेक्षा करने वाले खोजियों को हैरान करने के लिए नहीं, परन्तु अपने मसायाह होने की बात को प्रमाणित करने के लिए तरस दिखाते हुए आश्चर्यकर्म अवश्य किए (लूका 7:11-17; यूहन्ना 20:30, 31)। वह अपने समकालीनों की अपोकलिप्टिक अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं बैठता था, परन्तु उसने यह अवश्य सिखाया कि वह ''मनुष्य का पुत्र'' था। (पृष्ठ 120 पर दी गई विशेषताएं देखिए)। उसने भविष्यवाणी का अर्थ करने वालों की तरह प्रचार नहीं किया,

कि परमेश्वर का राज्य संसार के अन्त की एक घटना है; बल्कि उसने राज्य के निकट होने और अपनी पीढ़ी में ही इसके आ जाने की घोषणा की (मरकुस 1:14, 15; 9:1)। इस लिए किसी ने ठीक ही कहा है, ''हम किसी भी प्रकार से यीशु की व्याख्या अपोकलिप्टिक [भविष्यवाणी की भाषा] के प्रकाश में नहीं करते, परन्तु ... यीशु के प्रकाश में अपोकलिप्टिक की व्याख्या करते हैं।''[5]

पाद टिप्पणियां

[1]तु. जेम्स ई. प्रीस्ट, *जोहन्नाइन स्टडीसः ऐसेज़ इन ऑनर ऑफ़ फ्रैंक पैक,* सं. जेम्स ई. प्रीस्ट (मालिबु, कैलिफो.: पेपरडिन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1989), 182-204 में ''कंटेम्प्रेरी अपोकलिप्टिक स्कॉलरशिप एण्ड द रेवलेशन।'' [2]तु. जॉन जे. कोलिन्स, *द सैप्टर एण्ड द स्टारः द मसायाहज़ ऑफ़ द डैड सी स्क्रोल्स एण्ड अदर एनसियन्ट लिट्रेचर,* द ऐंकर बाइबल रैफ्रेन्स लाइब्रेरी, सामा. संस्क. डेविड नोयल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1995), 204-9. यह काम यीशु के जन्म से पहले और बाद में इस विषय पर पाए जाने वाले साहित्य में यहूदियों में पाए जाने वाले मसायाह सम्बन्धी बहुत से और विभिन्न विचारों का एक सावधानीपूर्वक विश्लेषण दिखाता है। ''जीज़स एण्ड द डेविडिक मसायाह'' विशेष दिलचस्पी का विषय है। [3]''मनुष्य के पुत्र'' के दुष्टों के न्याय, धर्मियों को बदला देने और उन्हें महिमा और शांति के स्थान में छुड़ाने के उदाहरणों के लिए अध्याय 46, 62, 63, 69-71 देखिए। [4]पूरे संदर्भ के लिए दानिय्येल 7 से तुलना कीजिए। [5]जी एबलिंग, *अपोकलिप्टिसिज़म,* सं. आर. डब्ल्यू. फंक, *जर्नल फ़ॉर थियोलोजी एण्ड द चर्च* (न्यू यॉर्कः पृ. न., 1969), 6:58 में ''द बिगिनिंग्ज़ ऑफ क्रिश्चियन थियोलोजी,'' डी. एस. रस्सल, *अपोकलिप्टिकः ऐनसियंट एण्ड* मॉडर्न (फिलाडेल्फियाः फोर्टरेस, 1979), 51 में उद्धृत।